DEPARTMENT OF SANSKRIT

COURSE CURRICULUM & MARKING SCHEME

B.A. I, II, III, IV Semester
SANSKRIT

(Based on Choice Based Credit System)

SESSION : 2023-24

B.A- III SANSKRIT

ESTD : 1958

GOVT. V.Y.T. PG AUTONOMOUS COLLEGE, DURG, 491001 (C.G.)

(Former Name – Govt. Arts & Science College, Durg)

NAAC Accredited Grade A+, College with CPE - Phase III (UGC), STAR COLLEGE (DBT)

Phone : 0788-2212030

Website - www.govtsciencecollegedurg.ac.in, Email – autonomousdurg2013@gmail.com

DEPARTMENT OF SANSKRIT

COURSE CURRICULUM & MARKING SCHEME

B.A. Part - III
SANSKRIT

SESSION : 2023-24

ESTD : 1958

GOVT. V.Y.T. PG AUTONOMOUS COLLEGE, DURG, 491001 (C.G.)

(Former Name – Govt. Arts & Science College, Durg)

NAAC Accredited Grade A+, College with CPE - Phase III (UGC), STAR COLLEGE (DBT)

Phone : 0788-2212030

Website - www.govtsciencecollegedurg.ac.in, Email – autonomousdurg2013@gmail.com

बी.ए. प्रथम सेमेस्टर (संस्कृत)
सत्र : 2023–24
विषय : नाटक एवं व्याकरण

स्नातक पाठ्यक्रमों के लिये केन्द्रीय अध्ययन मंडल अथवा उच्च शिक्षा विभाग, छत्तीसगढ़ शासन द्वारा विषयवस्तु अथवा अंक विभाजन में किसी तरह के परिवर्तन संबंधी निर्देश जारी किये जाने पर तदनुसार पाठ्यक्रम लागू किया जायेगा।

पाठ्यक्रम उद्देश्य
• विश्व की सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा संस्कृत के स्वर्णिम अतीत तथा वर्तमान युग में उसकी प्रासंगिकता का अवबोध होगा।
• संस्कृतभाषा में रचित अनेक शास्त्रों के अनुशीलन से शास्त्रीय ज्ञान सह तर्कपूर्ण मौलिक चिन्तन की क्षमता निर्मित होगी।
• संस्कृत काव्य की विविध विधाओं से परिचय के फलस्वरूप भाषामर्मज्ञता का विस्तार होगा।
• संस्कृत व्याकरण के अध्ययन से उच्चारण-लेखन की भाषिक दक्षता प्राप्त होगी।
• भारतीय मनीषा द्वारा विश्व को प्रदत्त ज्ञानावदान की जानकारी राष्ट्रगौरवानुभूतिपूर्वक मौलिक चिन्तन-सर्जन की प्रेरणा प्रदान करेगी।

पाठ्यक्रम विवरण — **पूर्णांक – 100**

इकाई 1

अध्यायः स्वप्नवासवदत्तम् : प्रथम, चतुर्थ तथा पंचम अंक

इकाई 2

अध्यायः व्याकरण : सुबन्त (संज्ञाशब्दरूप) राम, कवि, भानु, पितृ, करिन्, कर्तृ, चन्द्रमस, भगवत्, आत्मन्, लता, मति, नदी, धेनु, वधू, मातृ, फल, वारि, मधु, वाच् और रात्रि, सर्वनाम – सर्व, तद्, एतद्, यद्, इदम्, जगत्, अस्मद् तथा युष्मद् एक, द्वि, त्रि और चतुर्

इकाई 3

अध्यायः व्याकरण : तिङन्त (धातुरूप) भ्वादि, दिवादि, तुदादि, चुरादि इन चारों वर्गों के धातुओं के लट् लृट्, लोट् एवं लङ् एवं विधिलिंङ् लकारों तथा अस् एवं कृ धातुओं के सभी लकारों के रूप

इकाई 4

अध्यायः व्याकरण : प्रत्याहार एवं संज्ञा प्रकरण
लघुसिद्धान्त कौमुदी पर आधारित

इकाई 5

अध्यायः व्याकरण : संधि एवं विभक्त्यर्थ
अच्संधिः– यण्, अयादि, वृद्धि, दीर्घ, पूर्व रूप,
हल्संधिः – श्चुत्व, ष्टुत्व, जश्त्व, अनुनासिक
विसर्गसंधि :– सत्व, रूत्व और उत्व
लघु सिद्धान्त कौमुदी अनुसार

अधिगम परिणाम

- अभिनय कला के सांगोपांग ज्ञान से सम्बन्धित क्षेत्र में व्यावसायिक अवसर की संभावना बनेगी।
- पाठ्य नाटक से पर – हितार्थ सहयोग तथा त्याग – भावना की प्रवृत्ति उदित होगी।
- व्याकरण के अनुशीलन से पदच्छेद, पदों के समास तथा वाक्यों के वाच्य – परिवर्तन की क्षमता निर्मित होगी।
- संस्कृत संभाषण – लेखन का कौशल विकसित होगा।

अनुशंसित ग्रन्थ :

1.	स्वप्नवासवदत्तम्	:	भासप्रणीत
2.	रचनानुवाद कौमुदी	:	डॉ कपिलदेव द्विवेदी
3.	संस्कृतस्य व्यावहारिकस्वरूपम्	:	डॉ. नरेन्द्र, अरविन्द आश्रम, पाण्डिचेरी
4.	संस्कृतव्याकरण	:	श्रीधर वसिष्ठ
5.	संस्कृत में अनुवाद कैसे करें	:	उमाकान्त मिश्र शास्त्री, भारती भवन, पटना – 1971
6.	लघुसिद्धान्तकौमुदी	:	श्री शारदा रज्जल रॉय – 1954
7.	संस्कृतनिबन्धरत्नाकर	:	डॉ. शिवप्रसाद भारद्वाज, अशोक प्रकाशन दिल्ली – 1977 (द्वितीय संस्करण)

स्नातक कक्षाओं के लिये प्रश्नपत्र का प्रारूप तथा अंक विभाजन –

- स्नातक कक्षाओं के लिये प्रत्येक प्रश्नपत्र तीन खण्डों अ, ब, स में विभाजित होगा।
- खण्ड अ में अति लघुउत्तरीय प्रश्न एक या दो वाक्यों में उत्तर या वस्तुनिष्ठ प्रश्न होंगे, बहुविकल्पीय प्रश्न नहीं होंगे, रिक्त स्थानों की पूर्ति करों जैसे प्रश्न भी नहीं होंगे।
- खण्ड ब में लघुउत्तरीय प्रश्न होंगे जिनका उत्तर 150 शब्दों में देना होगा।

- खण्ड स में दीर्घउत्तरीय/निबंधात्मक प्रश्न होंगे। विद्यार्थियों को अधिकतम 350 शब्दों में सटीक उत्तर लिखना होगा।
- प्रश्न पत्र का प्रारूप एवं अंक विभाजन निम्नानुसार होगा।

प्रश्न के प्रकार	पूर्णांक ~~100~~ 80 अंक x प्रश्नों की संख्या
क. अति लघुउत्तरीय प्रश्न	2X10=20
ख. लघुउत्तरीय प्रश्न	4X5=20
ग. दीर्घउत्तरीय प्रश्न	8X5=40
	कुल 80

मूल्यांकन योजना	अधिकतम अंक 100	
बाह्य परीक्षा अति लद्युउत्तरीय लघूत्तरीय अति दीर्घउत्तरीय	खण्ड अ – 2X10=20 खण्ड ब – 4X5=20 खण्ड स – 8X5=40	80 अंक
आंतरिक परीक्षा सतत् व्यापक मूल्यांकन	पाठ्य संबंधित परियोजना/असाइंटमेंट/पेपर प्रेजेटेंशन – 10 आंतरिक टेस्ट 10	20 अंक

नाम एवं हस्ताक्षर

अध्यक्ष – श्री जनेन्द्र कुमार दीवान विषय विशेषज्ञ – डॉ. दिव्या देशपाण्डेय विषय विशेषज्ञ – डॉ. सुमन बघेल विषय विशेषज्ञ – डॉ. सुषमा तिवारी	अन्य विभागीय सदस्य 1. प्रो. थानसिंह वर्मा 2. छात्र प्रतिनिधि – मनीष कुमार वर्मा 3.उद्योग जगत से – सुश्री उपमा ठाकुर

सत्र : 2023–24

बी.ए. प्रथम सेमेस्टर (संस्कृत)

कौशल संवर्धन पाठ्यक्रम (स्किल एन्हासमेंट कोर्स)

भाषा कौशलम्

क्रेडिट – 2
पूर्णांक – 50

पाठ्यक्रम का उद्देश्य –

1. संस्कृत भाषा के वर्णों की सम्यक् जानकारी देना।
2. संस्कृत भाषा के पठन, लेखन, वाचन में कुशलता लाना।
3. संस्कृत भाषा का सामान्य व्याकरणिक ज्ञान।
4. संस्कृत भाषा के व्यावहारिक जीवन में प्रयोग की जानकारी।

पाठ्यक्रम विवरण –

इकाई 1

अध्यायः व्याकरण : वर्णमाला ज्ञान प्रकरण (माहेश्वर सूत्राणि) –
संस्कृत भाषा में प्रयुक्त वर्णों का परिचय (स्वर, व्यंजन एवं विसर्ग)

इकाई 2

अध्यायः व्याकरण : वर्णों का उच्चारण स्थान –
संस्कृत में वर्णों के उच्चारण के स्थानों का ज्ञान

इकाई 3

अध्यायः व्याकरण : काल, वचन, पुरूष, लिंग तथा समय का ज्ञान

इकाई 4

अध्यायः व्याकरण : दैनिक व्यावहारिक जीवन में प्रयुक्त होने वाली वस्तुओं के संस्कृत नाम –
(फल, फूल, सब्जियाँ, घर–आलमारी, रिश्तों के नाम इत्यादि तथा संख्या का ज्ञान)

इकाई 5

अध्यायः व्याकरण : संस्कृत–संभाषण –
आत्म–परिचय, सामान्य–वाक्य–व्यवहार, (दिनचर्या – जागरण, स्नान, भोजन इत्यादि)

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम

इस पाठ्यक्रम को अध्ययन करने के उपरान्त विद्यार्थियों को –

- संस्कृत भाषा के वर्णों की सम्यक् जानकारी प्राप्त होगी।
- संस्कृत में वाक्य निर्माण प्रक्रिया का ज्ञान होगा।
- संस्कृत में संभाषण की प्रवृत्ति होगी।
- व्याकरण के प्रारंभिक ज्ञान की प्राप्ति होगी।
- संस्कृत के व्यवहार में आने वाले शब्दों का ज्ञान होगा।

नाम एवं हस्ताक्षर

अध्यक्ष – श्री जनेन्द्र कुमार दीवान	अन्य विभागीय सदस्य
विषय विशेषज्ञ – डॉ. दिव्या देशपाण्डेय	1. प्रो. थानसिंह वर्मा
विषय विशेषज्ञ – डॉ. सुमन बघेल	2. छात्र प्रतिनिधि – मनीष कुमार वर्मा Manish.v
विषय विशेषज्ञ – डॉ. सुषमा तिवारी	3.उद्योग जगत से – सुश्री उपमा ठाकुर Thakur

बी.ए. – द्वितीय सेमेस्टर (संस्कृत)
सत्र : 2023–24
विषय : पद्यकाव्य कथा एवं साहित्येतिहास

स्नातक पाठ्यक्रमों के लिये संस्कृत अध्ययन मंडल अथवा उच्च शिक्षा विभाग, छत्तीसगढ़ शासन द्वारा विषयवस्तु अथवा अंक विभाजन में किसी तरह के परिवर्तन संबंधी निर्देश जारी किये जाने पर तदनुसार पाठ्यक्रम लागू किया जायेगा।

पाठ्यक्रम उद्देश्य
• विश्व की सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा संस्कृत के स्वर्णिम अतीत तथा वर्तमान युग में उसकी प्रासंगिकता का अवबोध होगा।
• संस्कृतभाषा में रचित अनेक शास्त्रों के अनुशीलन से शास्त्रीय ज्ञान सह तर्कपूर्ण मौलिक चिन्तन की क्षमता निर्मित होगी।
• संस्कृत काव्य की विविध विधाओं से परिचय के फलस्वरूप भाषामर्मज्ञता का विस्तार होगा।
• संस्कृत व्याकरण के अध्ययन से उच्चारण-लेखन की भाषिक दक्षता प्राप्त होगी।
• भारतीय मनीषा द्वारा विश्व को प्रदत्त ज्ञानावदान की जानकारी राष्ट्रगौरवानुभूतिपूर्वक मौलिक चिन्तन-सर्जन की प्रेरणा प्रदान करेगी।

पाठ्यक्रम विवरण

पूर्णांक – ~~100~~ 80

इकाई 1

अध्यायः पद्य काव्य : मूल रामायण

इकाई 2

अध्यायः कथा : हितोपदेश कथामुख, कथा 1 लोभी पथिक कथा एवं कथा 2

इकाई 3

अध्यायः समीक्षा : मूल रामायण एवं हितोपदेश समीक्षा

इकाई 4

अध्यायः वैदिक साहित्य : वैदिक एवं पौराणिक साहित्य का सामान्य परिचय (वेद, ब्राम्हण, आरण्यक, उपनिषद्, वेदांगों एवं पुराणों का संक्षिप्त परिचय।

इकाई 5

अध्यायः साहित्येतिहास : निम्नलिखित प्रमुख कवियों का परिचय – महाकवि कालिदास, भारवि, माघ श्रीहर्ष, विशाखदत्त, बाणभट्ट, शूद्रक, भवभूति।

अधिगम परिणाम

- आदिकाव्य रामायण महाकाव्य के अनुशीलन से भारतीय सांस्कृतिक चेतना का प्रसार तथा चारित्रिक आदर्श की प्ररेणा प्राप्त होगी।
- पाठ्य विषय से भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों से सुपरिचित हो सकेंगे।
- नैतिक चिन्तन की क्षमता में अभिवृद्धि होगी और चारित्रिक – विकास होगा।
- भारतीय मनीषी तत्व – चिन्तको द्वारा ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में विश्व को प्रदत्त अभूतपूर्व अवदान की जानकारी मिलेगी।

अनुशंसित ग्रन्थ :

1.	मूलरामायण	:	डॉ श्री कृष्णमणि त्रिपाठी, चौखंबा प्रकाशन,वाराणसी
2.	संस्कृतसाहित्य का अभिनव इतिहास	:	श्री राधा वल्लभ त्रिपाठी, वि.वि. प्रकाशन, सागर
3.	संस्कृतसाहित्य का इतिहास	:	पं. बलदेव उपाध्याय, चौखंबा प्रकाशन,वाराणसी
4.	हितोपदेश मित्रलाभ	:	मोतीलाल बनारसीदास काशी अथवा चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी
5.	हितोपदेश मित्रलाभ	:	डॉ. महेशचन्द्र शर्मा, छ.ग.राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी, रायपुर (छ.ग.)

मूल्यांकन योजना	अधिकतम अंक 100	
बाह्य परीक्षा अति लघुउत्तरीय लघूत्तरीय अति दीर्घउत्तरीय	खण्ड अ – 2X10=20 खण्ड ब – 4X5=20 खण्ड स – 8X5=40	80 अंक
आंतरिक परीक्षा सतत् व्यापक मूल्यांकन	पाठ्य संबंधित परियोजना/असाइंटमेंट/पेपर प्रेजेटेंशन – 10 आंतरिक टेस्ट 10	20 अंक

नाम एवं हस्ताक्षर

अध्यक्ष – श्री जनेन्द्र कुमार दीवान	अन्य विभागीय सदस्य
विषय विशेषज्ञ – डॉ. दिव्या देशपाण्डेय विषय विशेषज्ञ – डॉ. सुमन बघेल विषय विशेषज्ञ – डॉ. सुषमा तिवारी	1. प्रो. थानसिंह वर्मा 2. छात्र प्रतिनिधि – मनीष कुमार वर्मा 3.उद्योग जगत से – सुश्री उपमा ठाकुर

सत्र : 2023–24

बी.ए. द्वितीय सेमेस्टर (संस्कृत)

कौशल संवर्धन पाठ्यक्रम (स्किल एन्हासमेंट कोर्स)

गीता में आत्म प्रबंधन

क्रेडिट – 2
पूर्णांक – 50

पाठ्यक्रम का उद्देश्य –

- इस पाठयक्रम के अध्ययन के माध्यम से विद्यार्थियों को प्राचीन भारतीय। अध्यात्म की जानकारी प्रदान करना।
- गीता में दर्शाए जीवन दर्शन से विद्यार्थी को परिचय कराना।
- गीता के ज्ञान से विद्यार्थियों को आत्म प्रबंधन के प्रति जागरूक करना।

पाठ्यक्रम विवरण –

इकाई 1

अध्यायः श्रीमद्भगवत्गीता : गीता परिचय एवं महत्व

इकाई 2

अध्यायः श्रीमद्भगवत्गीता : द्वितीय अध्याय, (सांख्य योग) श्लोक संख्या एक से तीस तक ससंदर्भ व्याख्या

इकाई 3

अध्यायः श्रीमद्भगवत्गीता : द्वितीय अध्याय, (सांख्य योग) श्लोक संख्या तीस से छिहत्तर तक ससंदर्भ व्याख्या

इकाई 4

अध्यायः समीक्षा : गीतासार/समीक्षा/निबंध

इकाई 5

अध्यायः प्रायोगिक : प्रोजेक्ट/असाइनमेंट – गीता में आत्म प्रबंधन पर

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्यार्थी

- भारतीय जीवन दर्शन को आत्म सात कर उन्नति कर सकेंगे।
- गीता में दर्शाए भौतिक और आध्यात्मिक ज्ञान को प्राप्त कर सकेंगे।
- विद्यार्थी अपने जीवन में आत्म प्रबंधन का प्रयोग कर सकेंगे।
- विद्यार्थी जीवन का महत्त्व समझ इसे सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ सकेंगे।

नाम एवं हस्ताक्षर

अध्यक्ष – श्री जनेन्द्र कुमार दीवान	अन्य विभागीय सदस्य
विषय विशेषज्ञ – डॉ. दिव्या देशपाण्डेय	1. प्रो. थानसिंह वर्मा
विषय विशेषज्ञ – डॉ. सुमन बघेल	2. छात्र प्रतिनिधि – मनीष कुमार वर्मा Manish.v
विषय विशेषज्ञ – डॉ. सुषमा तिवारी	3.उद्योग जगत से – सुश्री उपमा ठाकुर Upmathakur

बी.ए. – तृतीय सेमेस्टर (संस्कृत)
सत्र : 2023–24
विषय : नाटक, व्याकरण तथा रचना

स्नातक पाठ्यक्रमों के लिये केन्द्रीय अध्ययन मंडल अथवा उच्च शिक्षा विभाग, छत्तीसगढ़ शासन द्वारा विषयवस्तु अथवा अंक विभाजन में किसी तरह के परिवर्तन संबंधी निर्देश जारी किये जाने पर तदनुसार पाठ्यक्रम लागू किया जायेगा।

पाठ्यक्रम उद्देश्य
• विश्व की सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा संस्कृत के स्वर्णिम अतीत तथा वर्तमान युग में उसकी प्रासंगिकता का अवबोध होगा।
• संस्कृतभाषा में रचित अनेक शास्त्रों के अनुशीलन से शास्त्रीय ज्ञान सह तर्कपूर्ण मौलिक चिन्तन की क्षमता निर्मित होगी।
• संस्कृत काव्य की विविध विधाओं से परिचय के फलस्वरूप भाषामर्मज्ञता का विस्तार होगा।
• संस्कृत व्याकरण के अध्ययन से उच्चारण-लेखन की भाषिक दक्षता प्राप्त होगी।
• भारतीय मनीषा द्वारा विश्व को प्रदत्त ज्ञानावदान की जानकारी राष्ट्रगौरवानुभूतिपूर्वक मौलिक चिन्तन-सर्जन की प्रेरणा प्रदान करेगी।

पाठ्यक्रम विवरण

पूर्णांक – ~~100~~ 80

			इकाई 1
अध्यायः	नाटक	:	नागानन्द (श्रीहर्षकृत) (प्रथम, चतुर्थ एवं पंचम अंक) द्वितीय एवं तृतीय अंक द्रुत पाठ।
			इकाई 2
अध्यायः	समीक्षा	:	नागानन्द
			इकाई 3
अध्यायः	व्याकरण (वाच्य)	:	लघुसिद्धांत कौमुदी : कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य एवं भाववाच्य।
			इकाई 4
अध्यायः	व्याकरण	:	लघुसिद्धांत कौमुदी : समास प्रकरण
			इकाई 5
अध्यायः	वाक्य रचना	:	व्याकरण के अधीत अंश पर आधारित पांच संस्कृत शब्दों से वाक्य रचना

अनुशंसित ग्रन्थ :

1.	शीघ्रबोधव्याकरणम्	:	डॉ. पुष्पा दीक्षित, पणिनीय शोध संस्थान, तेलीपारा, बिलासपुर
2.	नागानन्द नाटक	:	श्री हर्षरचित, चौखंबा प्रकाशन, वाराणसी
3.	लघुसिद्धांत कौमुदी	:	श्री घरानन्द शास्त्री
4.	रचनानुवाद कौमुदी	:	डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, चौखंबा प्रकाशन, वाराणसी
5.	संस्कृत में अनुवाद कैसे करें	:	उमाकान्त मिश्र शास्त्री, भारती भवन, पटना

स्नातक कक्षाओं के लिये प्रश्नपत्र का प्रारूप तथा अंक विभाजन –

- स्नातक कक्षाओं के लिये प्रत्येक प्रश्नपत्र तीन खण्डों अ, ब, स में विभाजित होगा।
- खण्ड अ में अति लघुउत्तरीय प्रश्न एक या दो वाक्यों में उत्तर या वस्तुनिष्ठ प्रश्न होंगे, बहुविकल्पीय प्रश्न नहीं होंगे, रिक्त स्थानों की पूर्ति करों जैसे प्रश्न भी नहीं होंगे।
- खण्ड ब में लघुउत्तरीय प्रश्न होंगे जिनका उत्तर 150 शब्दों में देना होगा।
- खण्ड स में दीर्घउत्तरी/निबंधात्मक प्रश्न होंगे। विद्यार्थियों को अधिकतम 350 शब्दों में सटीक उत्तर लिखना होगा।
- प्रश्न पत्र का प्रारूप एवं अंक विभाजन निम्नानुसार होगा।

प्रश्न के प्रकार	पूर्णांक ~~75~~ 80 अंक x प्रश्नों की संख्या
क. अति लघुउत्तरीय प्रश्न	2X10=20
ख. लघुउत्तरीय प्रश्न	4X5=20
ग. दीर्घउत्तरीय प्रश्न	8X5=40
	कुल 80

अधिगम परिणाम

अभिनय कला के सांगोपांग ज्ञान से सम्बन्धित क्षेत्र में व्यावसायिक अवसर की संभावना बनेगी।

पाठ्य नाटक से पर – हितार्थ सहयोग तथा त्याग – भावना की प्रवृत्ति उदित होगी।

व्याकरण के अनुशीलन से पदच्छेद, पदों के समास तथा वाक्यों के वाच्य – परिवर्तन की क्षमता निर्मित होगी।

संस्कृत संभाषण – लेखन का कौशल विकसित होगा।

मूल्यांकन योजना	अधिकतम अंक ~~100~~ 80	
बाह्य परीक्षा अति लघुउत्तरीय लघूत्तरीय अति दीर्घउत्तरीय	खण्ड अ – 2X10=20 खण्ड ब – 4X5=20 खण्ड स – 8X5=40	80 अंक
आंतरिक परीक्षा सतत् व्यापक मूल्यांकन	पाठ्य संबंधित परियोजना/असाइंटमेंट/पेपर प्रेजेंटेशन – 10 आंतरिक टेस्ट 10	20 अंक

नाम एवं हस्ताक्षर

अध्यक्ष – श्री जनेन्द्र कुमार दीवान विषय विशेषज्ञ – डॉ. दिव्या देशपाण्डेय विषय विशेषज्ञ – डॉ. सुमन बघेल विषय विशेषज्ञ – डॉ. सुषमा तिवारी	अन्य विभागीय सदस्य 1. प्रो. थानसिंह वर्मा 2. छात्र प्रतिनिधि – मनीष कुमार वर्मा 3.उद्योग जगत से – सुश्री उपमा ठाकुर

बी.ए. – चतुर्थ सेमेस्टर (संस्कृत)
सत्र : 2023–24
विषय : पद्य, तथा साहित्येतिहास

स्नातक पाठ्यक्रमों के लिये केन्द्रीय अध्ययन मंडल अथवा उच्च शिक्षा विभाग, छत्तीसगढ़ शासन द्वारा विषयवस्तु अथवा अंक विभाजन में किसी तरह के परिवर्तन संबंधी निर्देश जारी किये जाने पर तदानुसार पाठ्यक्रम लागू किया जायेगा।

पाठ्यक्रम उद्देश्य
• विश्व की सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा संस्कृत के स्वर्णिम अतीत तथा वर्तमान युग में उसकी प्रासंगिकता का अवबोध होगा।
• संस्कृतभाषा में रचित अनेक शास्त्रों के अनुशीलन से शास्त्रीय ज्ञान सह तर्कपूर्ण मौलिक चिन्तन की क्षमता निर्मित होगी।
• संस्कृत काव्य की विविध विधाओं से परिचय के फलस्वरूप भाषामर्मज्ञता का विस्तार होगा।
• संस्कृत व्याकरण के अध्ययन से उच्चारण-लेखन की भाषिक दक्षता प्राप्त होगी।
• भारतीय मनीषा द्वारा विश्व को प्रदत्त ज्ञानावदान की जानकारी राष्ट्रगौरवानुभूतिपूर्वक मौलिक चिन्तन-सर्जन की प्रेरणा प्रदान करेगी।

पाठ्यक्रम विवरण — पूर्णांक – ~~100~~ 80

इकाई 1

अध्यायः पद्य काव्य : रघुवंशमहाकाव्यम् द्वितीय सर्ग

इकाई 2

अध्यायः समीक्षा : रघुवंशमहाकाव्यम्

इकाई 3

अध्यायः नीतिशतकम् : नीतिशतकम् (भर्तृहरिकृत)

इकाई 4

अध्यायः महाकाव्य खंडकाव्य, गद्यकाव्य : महाकाव्य खंड काव्य, गद्य काव्य
महाकाव्य – रघुवंश, कुमार सम्भव, बुद्धचरित, सौदरानन्द, किरातार्जुनीय, नैषधीयचरित भट्टी काव्य, जानकी हरण, विक्रमांकदेवचरित, राजतरंगिणी।
खंड काव्य – (गीतिकाव्य एवं मुक्तक), शतकत्रय, ऋतुसंघार, मेघदूत, गीतगोविन्द, पंचलहरी।
गद्य काव्य – वासवदत्ता, कादम्बरी, हर्षचरित, दश कुमारचरित, शिवराजविजय (इन ग्रन्थों के लेखकों का सामान्य परिचय अपेक्षित)

अध्यायः नाटक एवं साहित्येतिहास : नाटक एवं साहित्येतिहास
नाटक – स्वप्नवासवदत्त, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, मृच्छकटिकम्, मुद्राराक्षस, वेणीसंघार, नागानन्द परिचय
कथा साहित्य – पंचतंत्र, हितोपेदश, वेताल पंचविशंति,

कथासरितसागर, वृहत्कथामंजरी।
(इन ग्रन्थों के लेखकों का सामान्य परिचय अपेक्षित)

अनुशंसित ग्रन्थ :

1. रघुवंशमहाकाव्यम् द्वितीय सर्ग : चौखंबा प्रकाशन वाराणसी
2. संस्कृत साहित्य का इतिहास : पं. बलदेव उपध्याय
3. संस्कृत साहित्य का अभिवनव इतिहास : डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी

स्नातक कक्षाओं के लिये प्रश्नपत्र का प्रारूप तथा अंक विभाजन –

- स्नातक कक्षाओं के लिये प्रत्येक प्रश्नपत्र तीन खण्डों अ, ब, स में विभाजित होगा।
- खण्ड अ में अति लघुउत्तरीय प्रश्न एक या दो वाक्यों में उत्तर या वस्तुनिष्ठ प्रश्न होंगे, बहुविकल्पीय प्रश्न नहीं होंगे, रिक्त स्थानों की पूर्ति करों जैसे प्रश्न भी नहीं होंगे।
- खण्ड ब में लघुउत्तरीय प्रश्न होंगे जिनका उत्तर 150 शब्दों में देना होगा।
- खण्ड स में दीर्घउत्तरीय/निबंधात्मक प्रश्न होंगे। विद्यार्थियों को अधिकतम 350 शब्दों में सटीक उत्तर लिखना होगा।
- प्रश्न पत्र का प्रारूप एवं अंक विभाजन निम्नानुसार होगा।

प्रश्न के प्रकार	पूर्णांक 80 अंक X प्रश्नों की संख्या
क. अति लघुउत्तरीय प्रश्न	2X10=20
ख. लघुउत्तरीय प्रश्न	4X5=20
ग. दीर्घउत्तरीय प्रश्न	8X5=40
	कुल 80

अधिगम परिणाम

काव्य के दृश्य – श्रव्य आदि भेदोपभेदों का सम्यक् ज्ञान होगा। विभिन्न ऐतिहासिक वृत्तों की जानकारी प्राप्त होगी।

पाठ्य विषय से भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों से सुपरिचित हो सकेंगे।

नैतिक चिन्तन की क्षमता में अभिवृद्धि होगी और चारित्रय – विकास होगा।

भारतीय मनीषी तत्व – चिन्तको द्वारा ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में विश्व को प्रदत्त अभूतपूर्व अवदान की जानकारी मिलेगी।

मूल्यांकन योजना	अधिकतम अंक 100	
बाह्य परीक्षा अति लघुउत्तरीय लघूत्तरीय अति दीर्घउत्तरीय	खण्ड अ – 2X10=20 खण्ड ब – 4X5=20 खण्ड स – 8X5=40	80 अंक
आंतरिक परीक्षा सतत् व्यापक मूल्यांकन	पाठ्य संबंधित परियोजना/असाइंटमेंट/पेपर प्रेजेटेंशन – 10 आंतरिक टेस्ट 10	20 अंक

नाम एवं हस्ताक्षर

अध्यक्ष – श्री जनेन्द्र कुमार दीवान विषय विशेषज्ञ – डॉ. दिव्या देशपाण्डेय विषय विशेषज्ञ – डॉ. सुमन बघेल विषय विशेषज्ञ – डॉ. सुषमा तिवारी	अन्य विभागीय सदस्य 1. प्रो. थानसिंह वर्मा 2. छात्र प्रतिनिधि – मनीष कुमार वर्मा 3.उद्योग जगत से – सुश्री उपमा ठाकुर

बी.ए. – तृतीय वर्ष (संस्कृत)
सत्र : 2023–24
प्रथम प्रश्न पत्र
विषय : नाटक, छन्द तथा व्याकरण

स्नातक पाठ्यक्रमों के लिये केन्द्रीय अध्ययन मंडल अथवा उच्च शिक्षा विभाग, छत्तीसगढ़ शासन द्वारा विषयवस्तु अथवा अंक विभाजन में किसी तरह के परिवर्तन संबंधी निर्देश जारी किये जाने पर तदनुसार पाठ्यक्रम लागू किया जायेगा।

पाठ्यक्रम उद्देश्य
• विश्व की सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा संस्कृत के स्वर्णिम अतीत तथा वर्तमान युग में उसकी प्रासंगिकता का अवबोध होगा।
• संस्कृतभाषा में रचित अनेक शास्त्रों के अनुशीलन से शास्त्रीय ज्ञान सह तर्कपूर्ण मौलिक चिन्तन की क्षमता निर्मित होगी।
• संस्कृत काव्य की विविध विधाओं से परिचय के फलस्वरूप भाषामर्मज्ञता का विस्तार होगा।
• संस्कृत व्याकरण के अध्ययन से उच्चारण-लेखन की भाषिक दक्षता प्राप्त होगी।
• भारतीय मनीषा द्वारा विश्व को प्रदत्त ज्ञानावदान की जानकारी राष्ट्रगौरवानुभूतिपूर्वक मौलिक चिन्तन-सर्जन की प्रेरणा प्रदान करेगी।

पाठ्यक्रम विवरण — पूर्णांक – 75

इकाई 1

अध्यायः नाटक : अभिज्ञानशाकुन्तलम् (कालिदासकृत)

इकाई 2

अध्यायः समीक्षा : अभिज्ञानशाकुन्तलम्

इकाई 3

अध्यायः छन्द : निर्धारित छन्दों के लक्षण तथा उदाहरण

अनुष्टुप, इन्द्रवज्रा, उपवेनद्रवज्रा, उपजाति, वंशस्थ, आर्या, मालिनी, शिखरिणी, वसन्ततलिका, शार्दूलविक्रीडित, स्त्रग्धरा, मन्दाक्रान्ता।

इकाई 4

अध्यायः व्याकरण : लघुसिद्धांत कौमुदी –

: कृदन्त प्रकरण – तव्यत्, तव्य, अनीयर्, यत्, क्यप्, शतृ, शानच्, क्त्वा, ल्यप्, तुमुन्, क्त, क्तवतु, ण्वुल, तृच्, ल्युट्, अण्

इकाई 5

अध्यायः व्याकरण : लघुसिद्धांत कौमुदी –

1. तद्धित् प्रत्यय – अण्, ढक्, ष्यञ्, त्व, तढक, इमनिच्, अयम्, मतुप, इनि, इतच्, ईयसुन, तमप्, तरप्, ण्य, ययम्
2. स्त्री प्रत्यय – टाप्, ङीप्, ङीष्, ङीन्।

अनुशंसित ग्रन्थ :

1.	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	:	महाकवि कालिदासरचित, चौखंबा प्रकाशन वाराणसी
2.	शीघ्रबोधव्याकरणम्	:	डॉ. पुष्पा दीक्षित, पणिनीय शोध संस्थान, तेलीपारा, बिलासपुर
3.	लघुसिद्धांत कौमुदी	:	श्री घरानन्द शास्त्री
4.	संस्कृत हिन्दी कोष	:	वमन शिवराम आपटे
5.	छन्दोमंजरी	:	चौखंबा प्रकाशन वाराणसी

स्नातक कक्षाओं के लिये प्रश्नपत्र का प्रारूप तथा अंक विभाजन –

- स्नातक कक्षाओं के लिये प्रत्येक प्रश्नपत्र तीन खण्डों अ, ब, स में विभाजित होगा।
- खण्ड अ में अति लघुउत्तरीय प्रश्न एक या दो वाक्यों में उत्तर या वस्तुनिष्ठ प्रश्न होंगे, बहुविकल्पीय प्रश्न नहीं होंगे, रिक्त स्थानों की पूर्ति करों जैसे प्रश्न भी नहीं होंगे।
- खण्ड ब में लघुउत्तरीय प्रश्न होंगे जिनका उत्तर 150 शब्दों में देना होगा।
- खण्ड स में दीर्घउत्तरीय/निबंधात्मक प्रश्न होंगे। विद्यार्थियों को अधिकतम 350 शब्दों में सटीक उत्तर लिखना होगा।
- प्रश्न पत्र का प्रारूप एवं अंक विभाजन निम्नानुसार होगा।

प्रश्न के प्रकार	पूर्णांक 75 अंक X प्रश्नों की संख्या
क. अति लघुउत्तरीय प्रश्न	1X10=10
ख. लघुउत्तरीय प्रश्न	5X5=25
ग. दीर्घउत्तरीय प्रश्न	8X5=40
	कुल 75

अधिगम परिणाम

विश्वप्रसिद्ध नाटक की काव्यगत विशेषताओं की जानकारी मिलेगी।

अभिनय कला के कलात्मक तथा भावात्मक पक्ष का ज्ञान होगा।

व्याकरण के प्रत्यय – अनुशीलन से पद–व्युत्पति का बोध विस्तार होगा।

भाषिक क्षमता की वृद्धि होगी।

छत्तीसगढ़ के तीर्थ – स्थलों के अनुशीलन से प्रदेश के भौगोलिक – धार्मिक वैशिष्ठय का ज्ञान प्राप्त होगा।

नाम एवं हस्ताक्षर

अध्यक्ष – श्री जनेन्द्र कुमार दीवान विषय विशेषज्ञ – डॉ. दिव्या देशपाण्डेय विषय विशेषज्ञ – डॉ. सुमन बघेल विषय विशेषज्ञ – डॉ. सुषमा तिवारी	अन्य विभागीय सदस्य 1. प्रो. थानसिंह वर्मा 2. छात्र प्रतिनिधि – मनीष कुमार वर्मा Manish 3.उद्योग जगत से – सुश्री उपमा ठाकुर Thakur

बी.ए. – तृतीय वर्ष (संस्कृत)
सत्र : 2023–24
द्वितीय प्रश्न पत्र
विषय : काव्य, अलंकार एवं निबंध

स्नातक पाठ्यक्रमों के लिये केन्द्रीय अध्ययन मंडल अथवा उच्च शिक्षा विभाग, छत्तीसगढ़ शासन द्वारा विषयवस्तु अथवा अंक विभाजन में किसी तरह के परिवर्तन संबंधी निर्देश जारी किये जाने पर तदनुसार पाठ्यक्रम लागू किया जायेगा।

पाठ्यक्रम उद्देश्य
• विश्व की सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा संस्कृत के स्वर्णिम अतीत तथा वर्तमान युग में उसकी प्रासंगिकता का अवबोध होगा।
• संस्कृतभाषा में रचित अनेक शास्त्रों के अनुशीलन से शास्त्रीय ज्ञान सह तर्कपूर्ण मौलिक चिन्तन की क्षमता निर्मित होगी।
• संस्कृत काव्य की विविध विधाओं से परिचय के फलस्वरूप भाषामर्मज्ञता का विस्तार होगा।
• संस्कृत व्याकरण के अध्ययन से उच्चारण-लेखन की भाषिक दक्षता प्राप्त होगी।
• भारतीय मनीषा द्वारा विश्व को प्रदत्त ज्ञानावदान की जानकारी राष्ट्रगौरवानुभूतिपूर्वक मौलिक चिन्तन-सर्जन की प्रेरणा प्रदान करेगी।

पाठ्यक्रम विवरण **पूर्णांक – 75**

इकाई 1

अध्यायः काव्य : किरातार्जुनीयम् महाकाव्य (भारविकृत) प्रथम सर्ग

इकाई 2

अध्यायः समीक्षा : किरातार्जुनीयम्

इकाई 3

अध्यायः मूलरामायणम् : वाल्मीकिकृत

इकाई 4

अध्यायः अलंकार : उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अर्थान्तरन्यास, स्वाभावोक्ति, काव्यलिंग) अतिश्योक्ति, दीपक, विभावना, विशेषोक्ति, अपह्नुति, दृष्टांत, प्रतिस्तूपमा, निदर्शना, यमक, शब्दश्लेष, अनुप्रास, अनन्वय, ससन्देह, भ्रांतिमान्।
टिप्पणी : अलंकारों के लक्षण – चन्द्रलोक, साहित्य दर्पण अथवा काव्य प्रकाश नामक ग्रन्थ से अध्येतव्य है। उदाहरण – पाठ्यक्रमों में दिए गए पुस्तकों से भी दिये जा सकते हैं।

इकाई 5

अध्यायः निबन्ध : (संस्कृत भाषा में) 15 वाक्यों में।
टिप्पणी : निबन्ध, समीक्षात्मक अथवा विश्लेषणात्मक न होकर वर्णनात्मक पूछे जायेंगे।

अनुशंसित ग्रन्थ :

1. किरातार्जुनीयम् प्रथम सर्ग : भारविकृत

2. संस्कृत निबन्ध शतकम् : डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, चौखंबा प्रकाशन वाराणसी
3. निबन्ध परिजात : डॉ. रजनीकान्त लहरी, चौखंबा प्रकाशन वाराणसी
4. रचनानुवाद कौमुदी : डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, चौखंबा प्रकाशन वाराणसी
5. प्रबन्ध रत्नाकर : डॉ. रमेशचन्द्र शुक्ल, चौखंबा प्रकाशन वाराणसी
6. मूलरामायणम् – वाल्मीकिकृत चौखंबा प्रकाशन वाराणसी

स्नातक कक्षाओं के लिये प्रश्नपत्र का प्रारूप तथा अंक विभाजन –

- स्नातक कक्षाओं के लिये प्रत्येक प्रश्नपत्र तीन खण्डों अ, ब, स में विभाजित होगा।
- खण्ड अ में अति लघुउत्तरीय प्रश्न एक या दो वाक्यों में उत्तर या वस्तुनिष्ठ प्रश्न होंगे, बहुविकल्पीय प्रश्न नहीं होंगे, रिक्त स्थानों की पूर्ति करों जैसे प्रश्न भी नहीं होंगे।
- खण्ड ब में लघुउत्तरीय प्रश्न होंगे जिनका उत्तर 150 शब्दों में देना होगा।
- खण्ड स में दीर्घउत्तरीय/निबंधात्मक प्रश्न होंगे। विद्यार्थियों को अधिकतम 350 शब्दों में सटीक उत्तर लिखना होगा।
- प्रश्न पत्र का प्रारूप एवं अंक विभाजन निम्नानुसार होगा।

प्रश्न के प्रकार	पूर्णांक 75 अंक x प्रश्नों की संख्या
क. अति लघुउत्तरीय प्रश्न	1X10=10
ख. लघुउत्तरीय प्रश्न	5X5=25
ग. दीर्घउत्तरीय प्रश्न	8X5=40
	कुल 75

अधिगम परिणाम

आदिकाव्य रामायण महाकाव्य के अनुशीलन से भारतीय सांस्कृतिक चेतना का प्रसार तथा चारित्रिक आदर्श की प्ररेणा प्राप्त होगी।

महाभारत – आधारित ग्रन्थानुशीलन से कथा – परिचय सह राजनीतिक सूझ का विकास होगा।

छन्दों के ज्ञान से मौलिक काव्य – निर्माण की योग्यता विकसित होगी।

अलंकार – ज्ञान से मौलिक कल्पना तथा चिन्तन को विस्तार मिलेगी।

संस्कृत भाषा में निबन्ध, समाचार आदि लेखन – क्षमता से व्यावसायिक अवसर उपलब्ध होगा।

नाम एवं हस्ताक्षर

अध्यक्ष – श्री जनेन्द्र कुमार दीवान विषय विशेषज्ञ – डॉ. दिव्या देशपाण्डेय विषय विशेषज्ञ – डॉ. सुमन बघेल विषय विशेषज्ञ – डॉ. सुषमा तिवारी	अन्य विभागीय सदस्य 1. प्रो. थानसिंह वर्मा 2. छात्र प्रतिनिधि – मनीष कुमार वर्मा Manish 3.उद्योग जगत से – सुश्री उपमा ठाकुर Thakur